Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

मध्यकालीन राजस्थान में पर्यटन क्षेत्रः इस्लामी स्थापत्य कला के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. अल्ताफ खान*

प्रस्तावना

मुस्लिम शासक महान भवन निर्माताओं के रुप में विख्यात हैं उन्होंने अपने सम्पूर्ण राज्य में अनेक नगरों की स्थापना की जो कालान्तर में व्यापार एवं वाणिज्य के उन्नत केन्द्र बने। उन्होंने शाही महलों, दुर्गों, सार्वजनिक इमारतों, मस्जिदों मदरसों, दरगाहों तथा मकबरों का निर्माण करवाया। उनकी अच्छी निर्माण गतिविधि ने इसका भारतीय मुस्लिम वास्तुकला के रुप में उत्थान किया। दो सांस्कृतिक धाराओं के बीच में मिलन ने स्पष्ट रुप से विभिन्न आकारों द्वारा वास्तुकला के क्षेत्र में उत्कृष्ट छाप छोड़ी । यह उल्लेखनीय हैं कि दो वास्तुकला के प्रकारों के संगम जिसमें एक स्वदेशी तथा दूसरा विदेशी मानों की निर्माण कला के प्रति अवस्था एवं भावना कार्यविधि एवं निर्माण में प्रयोग किये जाने वाले पदार्थो दोनों के सन्दर्भ में अपनी अलग दृष्टि थी।[2]

राजस्थान में मुस्लिम स्थापत्य कला

पश्चिम राजस्थान में स्थापत्य कला के उदभव एवं विकास के तीन कारण थे। धार्मिक प्रेरणा ने मन्दिर उपासरे, मठ इत्यादि के निर्माण को प्रोत्साहित किया। राजस्थान भूमि के निर्माण को प्रोत्साहित किया। राजस्थान भूमि पर अधिकार करने वाले मुस्लिम शासकों ने भी धार्मिक उपासना के लिए मस्जिदों, मरदसो, मकबतों का निर्माण करवाया। दूसरा कारण आवश्यकता की पूर्ति था। प्रदेश की रक्षा करने के लिए दुर्ग बनवाए गए। शहर पनाहों का निर्माण करवाया गया। राजधानी की स्थापना करते समय निवास स्थान (महल) बनवाए गए। पानी का आवश्यकता की पूर्ति के लिए कृत्रिम तालाब एवं झील बनवाई गई। तीसरा कारण व्यक्तिगत ऐश्वर्य की प्राप्ति था। राजस्थान के पश्चिम क्षेत्र के भवनों में हिन्दु मस्लिम स्थापत्य शैली का प्रभाव पाया जाता है हिन्दु कारीगरों ने मुस्लिम आदर्शो के जो भवन बनाये उन्हें सुप्रसिद्ध कला मर्मज्ञ फर्गुसन के इण्डो सारसेनिक शैली की संज्ञा दी है इस इण्डो सारसेनिक शैली की मुख्य विशेषताएँ है।[3]

1. इस शैली के भवनों में अधिकता मीनार पाई जाती है, जो नीचे से मोटी और ऊपर से पतली होती थी तथा मीनार के प्रत्येक भाग में संतुलित अनुपात दिखाई देता था।
2. इस शैली की इमारतों में गुम्बद बनाये जाते थे। किसी–किसी गुम्बद में रोशनी के लिए खिड़की भी रखी जाती थी।
3. विशाल (बुलन्द) फाटक बनाये जाते थे।
4. कंकरीट और चूने के प्रयोग से इन इमारतों को मजबूत बना दिया।
5. कुर्सी ऊँची रखी जाती थी कुर्सी के निचले भाग में तहखाने भी रखे जाते थे।

*सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्ड्वाडा, राजस्थान।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

6. दीवारो को चौड़ा और मजबूत बनाया जाता था।
7. मुश्तों का भी प्रयोग किया जाता था जिससे पानी रूका नहीं रहे।
8. प्रत्येक भाग में समानता रखी जाती थी।
9. छज्जे व ताक भी बनाये जाते थे।
10. डाटदार छतें व दरवाजे भी बनाये जाते थे।
11. दरवाजे मेहराबदार होते थे।
12. सजावट का प्रधान होता था।

राजस्थान की इस्लामी स्थापत्य कला व दिग्दर्शन मस्जिद मीनार व स्तम्भ, मकबरे, दरगाह, खानकाह, इत्यादि सार्वजनिक ग्रहों में मिलता है।[4]

मुस्लिम प्रभाव के कारण राजपूत स्थापत्य में मीनार, गुम्बद, मेहराबदार दरवाजे, विशालदार तथा फाटक, ऊँची कुर्सी के निचले भाग में तहखाना डाटदार छज्जे, भव्य इमारते तथा चमकदार पॉलिश का प्रचलन देखने को मिलता है। इस्लामी स्थापत्य से प्रभावित होने के पश्चात् भी राजपूत स्थापत्य में अपनी निजी परम्पराओं का निर्वाह होता रहा।[5] मारवाड़ मे जैन शैली की बजाय राजपूत स्थापत्य का प्रभाव विवेच्यकाल में अधिक रहा तथा यहाँ का स्थापत्य कला का दिग्दर्शन दुर्ग, महल, मन्दिर, मस्जिद, मीनार, स्तम्भ, समाधि स्थल थड़े, मकबरे दरगाह व सती चबुतरों, छत्रियों इत्यादि स्मारकों, बावड़ियों झालरों, जलशय के घाटों व उसके किनारे बनाये गये भवनों एवं सार्वजनिक ग्रहों में देखा जा सकता है। राजस्थान के स्थापत्य कला के ये नमूने आज भी राजपूत स्थापत्य कला की कहानी कहने सीना ताने खड़े है इसमें कुछ खंडहर अवस्था में भी है और कुछ खण्डहर होते जा रहे है केवल वे ही स्थल सुरक्षित या अच्छी दशा में है जो किसी की निजी सम्पत्ति के रूप में है या सार्वजनिक या प्राइवेट ट्रस्ट के अधीन है या किसी कारण पूज्य या अधिक चर्चित स्थल रहे है।[6] जालौर का दुर्ग पश्चिमी राजस्थान का अत्यधिक विशाल और सुदृढ़ दुर्ग माना जाता है दुर्ग के भीतर मुसलमान सन्त मलिकशाह की दरगाह और मस्जिद[7] है जो की इस्लामी स्थापत्य कला का एक अच्छा उदाहरण है।

नागौर दुर्ग की स्थापत्यकला मारवाड़ के अन्य दुर्गों से भिन्न हैं। मारवाड़ में स्थित प्राय: सभी महत्वपूर्ण दुर्ग गिरि दुर्ग हैं। पहाड़ की चोटी पर बने हुए है जबकि यह दुर्ग भूमि पर बना हुआ है।[8] इस दुर्ग में अकबरी महल व अमर महल का निर्माण हुआ। बादल महल के भीतर की चित्रकारी व इसके भित्ति चित्र बहुत आकर्षक है। वास्तव में यह इस्लामी कला व राजपूत कला का सुन्दर नमूना कहा जा सकता है इसमें कलाकारों ने जो चित्र बनाये वे बड़े जीवन्त और उस काल के इस मरूभूमि के शासकों की जीवन के प्रति जो सुरुचि थी उसको अभिव्यक्ति करने वाले है। इस महलात में मुगल शैली के बाग–बगीजों व स्नानागारों एवंत रणतालों का भी निर्माण करवाया गया है।[9] किले में एक पुराना मंदिर व मस्जिद है। मस्जिद का निर्माण मुगल सम्राट शाहजहां ने करवाया था। मुगलों से सम्पर्क बढ़ने से मुगलों की शान के अनुरूप अपने राज प्रासादों के स्थापत्य को ढालने में उसकी रूचि बढ़ती गई। मुगल स्थापत्य का यहाँ प्रभाव अधिक बढ़ने का एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि मुगलों के पतन के पश्चात् उनके आश्रित शिल्पकारों को यहाँ के शासकों ने प्रश्रय दिया। उनके आश्रय में उन कलाकारो ने अपना कार्य पुन: प्रारम्भ किया, अत: उनकी कला में मुगल प्रभाव आना स्वाभाविक था। इतना ही नहीं अपितु सामन्तों व जागीरदारों के महलों के स्थापत्य में भी यह प्रभाव देखने को मिला है। इस प्रकार मुगल शैली का प्रभाव यहाँ के स्थापत्य मे

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

समय पाकर विस्तार पाया गया।[10] हिन्दु उपासना–ग्रहों (मन्दिरों) की भांति मारवाड़ में मुस्लिम उपासना के केन्द्र के रूप में मस्जिदों का निर्माण हुआ। मस्जिदों का निर्माण इस्लाम की धार्मिक भावना से प्रेरित था।[11] धार्मिक आन्दोलन के परिणामस्परूप सौहार्द व सामजंस्य स्थापित होने पर हिन्दुओं ने भी मुस्लिम उपासना–ग्रहों को मानकर उनका आदर करना प्रारम्भ किया। इतना ही नहीं मेड़ता की जामा मस्जिद जो पूर्व में बंद थी उसे मेड़ता के राजा सुजानसिंह नामक शासक ने नमाज पढ़ने के लिए पुनः खुलवायी तथा उसका जीर्णोद्धार करवाया।

जिसका उल्लेख मेड़ता की जामा मस्जिद में लगे फारसी शिलालेख में हुआ है[12] जो शाहजहां के समय में यहाँ निर्मित हुई। इससे यह ज्ञात होता है कि खुदा की इबादत को नेक या पुण्य कर्म मानकर हिन्दुओं ने उनके उपासन गृह की प्रतीक मस्जिदों को इज्जत की साथ कई अवसरों पर उसकी सुरक्षा का भार भी स्वीकार किया।

मस्जिदों का वास्तुशिल्प भी अपने ढंग का एक निश्चित आकार प्रकार वाला था। जिसकी ऊँची मीनारें व गुम्बद दूर से ही उसकी पहचान करवा देते थे। मारवाड़ मे मुगल शासकों द्वारा व उनके सुबेदारो द्वारा निर्मित मस्जिदें बड़ी व विशाल आकार लिये होती थी। उनका नामकरण भी प्रायः उसके निर्माणकर्ता के आधार पर किया हुआ मिलता है। जैसे बाबरी मस्जिद, अकबरी मस्जिद, जहाँगीर मस्जिद आदि। जिस मुगल सम्राट के काल में यह मस्जिदे निर्मित हुई प्रायः उसी के आधार पर अकबरी व जहाँगीरी मस्जिद आदि नामकरण देने का भी यहां रिवाज (परम्परा) रहा है। शम्स तालाब पर नागौर के सुबेदार शम्सुद्दीन द्वारा निर्मित शमशीइ जामा मस्जिद, शाहजहा के काल में निर्मित तहसील चौक नागौर में स्थित शाहजादी मस्जिद जिसका निर्माण ताहिर खां ने करवाया तथा नागौर में स्थित मस्जिद किला नागौर बादशाह शाहजहाँ के जमाने में सिपहसालार खानेखाना महावतखां ने बनवाई।[13]

सदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. जे. एल. मेहता, पूर्वोक्त, भाग–तृतीय, पृ. 215.
[2]. जियाउद्दीन ए देषाई, इण्डो इस्लामिक आर्कटिक्चर, पृ 1,1970 दिल्ली।
[3]. डॉ. वी.एस. भार्गव, राजस्थान का इतिहास (1176–1900 ए.डी.) पृ. 300 जयपुर 1980.
[4]. वही, पृ.302.
[5]. डॉ. विक्रमसिंह राठौड़ मारवाड़ का सांस्कृतिक इतिहास, (कलाएँ) पृ. 5, जोधपुर 1998.
[6]. वही, पृ. 6.
[7]. पं. गौरीशकर हीराचन्द ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड–1, पृ. 57.
[8]. रतनलाल मिश्र, राजस्थान के दुर्ग, पृ. 81.
[9]. वही, पृ. 70.
[10]. डॉ. विक्रम सिंह राठौड़ पूर्वोक्त, पृ. 75.
[11]. डॉ. विक्रन सिह राठौड़, मारवाड़ का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 23, जोधपुर 1998.
[12]. वही।
[13]. परिजादा रौनक उस्मानी, दिल्ली गेट, नागौर से हुई बातचीत व प्राप्त जानकारी के आधार पर।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.